टेक्नॉलॉजी पर महात्मा गांधी के विचारों का महत्व

भारत डोगरा

तकनीक के प्रति दृष्टिकोण में महात्मा गांधी ने अपने मौलिक विचारों से विश्व का बहुत महत्वपूर्ण मार्गदर्शन किया व एक नई राह दिखाई। आज जब विश्व तेज़ तकनीकी बदलाव के दौर से गुज़र रहा है, उनके विचारों का महत्व और भी बढ़ गया है।

आधुनिक अर्थव्यवस्था में संवृद्धि का एक मुख्य स्रोत तकनीकी बदलाव है। नए उत्पादों व उत्पादन के नए तौर-तरीकों की खोज मुख्य रूप से कम समय में अधिक मुनाफा कमाने से प्रभावित होती है। नए उत्पाद या उत्पादन के नए तौर-तरीकों के बारे में पता चलने पर उसे तुरंत बड़े पैमाने के उत्पादन में परिवर्तित करने के लिए बहुत दबाव रहता है क्योंकि अधिक मुनाफा प्राप्त करने की यह संभावना पहल करने वाली कंपनी व उसके सहयोगियों को कुछ वर्षों के लिए ही उपलब्ध होती है। उसके बाद तो नए उत्पाद या तौर-तरीकों को अन्य कंपनियां भी अपना सकती हैं, या फिर इसके और आकर्षक विकल्प आ जाते हैं। संक्षेप में, पूरी अर्थव्यवस्था मुनाफे की कसौटी पर उपयोगी उत्पादों व तौर-तरीकों के तेज़ प्रसार का दबाव बनाती है।

पर महात्मा गांधी ने कहा कि नई तकनीक व उत्पाद का प्रसार केवल मुनाफे के आधार पर उचित नहीं ठहराया जा सकता। इसके लिए हमें कुछ और कसौटियां अपनानी होंगी। गांधी जी ने जो सबसे महत्वपूर्ण कसौटी बताई, वह थी रोज़गार की कसौटी। विशेषकर बेरोज़गारी से त्रस्त व प्रचुर श्रम शक्ति की उपलब्धि वाले भारत जैसे देश के लिए इस कसौटी को उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण बताया। उनका कहना था कि यदि नए उत्पाद व उत्पादन के नए तरीके श्रम पर निर्भरता कम कर मुनाफा बढ़ाने में बहुत सक्षम हैं, तो हमें इन्हें स्वीकार नहीं करना चाहिए क्योंकि हमारा पहला उद्देश्य मुनाफा बढ़ाना नहीं अपितु सबको रोज़गार उपलब्ध करवाना है।

उनकी यह सोच एक अन्य तरह से स्वदेशी की उनकी अवधारणा के रूप में सामने आई। स्वदेशी से गांधीजी का अर्थ यह था कि जिन वस्तुओं का उत्पादन हमारे आस-पास हो सकता है, उसके लिए हम दूर के स्थानों में उत्पादित वस्तु को न खरीदें। स्थानीय स्तर पर रोज़गार सृजन को तभी हमारा समर्थन-सहयोग मिल सकेगा। हो सकता है नई तकनीक से उत्पादित दूर की वस्तु कुछ सस्ती मिल जाए या उसकी चमक-दमक कुछ अधिक हो, मगर स्वदेशी का सिद्धांत तो यही कहता है कि स्थानीय रोज़गार को बढ़ावा देने वाली स्थानीय वस्तुओं को हम उपभोक्ता के रूप में अपना समर्थन अवश्य दें।

महात्मा गांधी ने बुनियादी बात यह बताई कि तकनीक का प्रसार केवल मुनाफा चालित नहीं हो सकता अपितु समाज की व्यापक भलाई के आधार पर इसका निर्णय होगा। इस व्यापक भलाई को जानने की एक अति महत्वपूर्ण कसौटी उन्हें लोगों की रोज़ी-रोटी बताई। तकनीक ऐसी न हो जो लोगों की रोज़ी-रोटी नष्ट करे।

एक बार समाज की व्यापक भलाई की गांधीजी की बात को मान लिया जाए, तो अन्य कसौटियां भी सामने आ जाती हैं। आज के समय में यह बहुत महत्वपूर्ण हो गया है किसी भी नए उत्पाद या तौर-तरीके के बारे में पूछा जाए कि इसका पर्यावरण व स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ेगा। अर्थात तकनीक के बारे गांधी जी की व्यापक सोच कई अन्य द्वार भी खोलती है व नई तकनीक के अंधाधुंध प्रसार के बदले व्यापक सामाजिक लाभ-हानि की दृष्टि से बहुपक्षीय मूल्याकंन का मार्ग प्रशस्त करती है। ***(स्रोत फीचर्स)***